भगवान् शंकर एवं लिंगार्चन का माहात्म्य[1]

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा—महाबाहु युधिष्ठिर! अब मैं अनेक नाम और रूप धारण करनेवाले महात्मा भगवान् रुद्र का माहात्म्य बतला रहा हूँ, सुनिये। विद्वान् पुरुष इन महादेवजी को अग्नि, स्थाणु, महेश्वर, एकाक्ष, त्र्यम्बक, विश्वरूप और शिव आदि अनेक नामों से पुकारते हैं। वेद में उनके दो रूप बताये गये हैं, जिन्हें वेदवेत्ता ब्राह्मण जानते हैं। उनका एक स्वरूप तो घोर है और दूसरा शिव। इन दोनों के भी अनेक भेद हैं।[2] इनकी जो घोर मूर्ति है, वह भय उपजानेवाली है। उसके अग्नि, विद्युत् और सूर्य आदि अनेक रूप हैं। इससे भिन्न जो शिव नामवाली मूर्ति है, वह परम शान्त एवं मङ्गलमयी है। उसके धर्म, जल और चन्द्रमा आदि कई रूप हैं। महादेवजी के आधे शरीर को अग्नि और आधे को सोम कहते हैं। उनकी शिवमूर्ति ब्रह्मचर्य का पालन करती है और जो अत्यन्त घोर मूर्ति है, वह जगत् का संहार करती है।

उनमें महत्त्व और ईश्वरत्व होने के कारण वे 'महेश्वर' कहलाते हैं। वे जो सबको दग्ध करते हैं, अत्यन्त तीक्ष्ण हैं, उग्र और प्रतापी हैं, प्रलयाग्निरूप से मांस, रक्त और मज्जा को भी अपना ग्रास बना लेते हैं; इसलिये 'रुद्र' कहलाते हैं। वे देवताओं में महान् हैं, उनका विषय भी महान् है तथा वे महान् विश्व की रक्षा करते हैं; इसलिये 'महादेव' कहलाते हैं। उनकी जटा का रूप धूम्र वर्ण का है, इसलिये उन्हें 'धूर्जटि' कहते हैं। सब प्रकार के कर्मों द्वारा सब लोगों की उन्नति करते हैं और सबका कल्याण चाहते हैं; इसलिये इनका नाम 'शिव' है। ये ऊर्ध्वभाग में स्थित होकर देहधारियों के प्राणों का नाश करते हैं। सदा स्थिर रहते हैं और जिनका लिङ्गविग्रह सदा स्थिर रहता है। इसलिये ये 'स्थाणु' कहलाते हैं।

भूत, भविष्य और वर्तमानकाल में स्थावर और जङ्गमों के आकार में उनके अनेक रूप प्रकट होते हैं, इसलिये ये 'बहुरूप' कहे गये हैं। समस्त देवता उनमें निवास करते हैं, इसलिये वे 'विश्वरूप' कहे गये हैं। उनके नेत्र से तेज प्रकट होता है तथा उनके नेत्रों का अन्त नहीं है। इसलिये वे 'सहस्राक्ष' 'आयुताक्ष' और 'सर्वतोऽक्षिमय' कहलाते हैं। वे सब प्रकार से पशुओं का पालन करते हैं, उनके साथ रहने में सुख मानते हैं तथा पशुओं के अधिपति हैं, इसलिये वे पशुपति

---

1. प्रस्तुत लेख गीताप्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित सटीक 'महाभारत' (षष्ठ खण्ड) के अनुशासनपर्व के अध्याय 161 का संक्षेप है।

2. शिवपुराण, लिंगपुराण एवं सूर्यपुराण जैसे अनेक ग्रन्थों में शिव के स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डाला गया हैं, जिसकी जानकारी के लिये पाठक इस पुस्तक का प्रथम भाग देखें।

कहलाते हैं।

मनुष्य यदि ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए प्रतिदिन स्थिर शिवलिङ्ग की पूजा करता है तो इससे महात्मा शंकर को बड़ी प्रसन्नता होती है। जो महात्मा शंकर के श्रीविग्रह अथवा लिङ्ग की पूजा करता है, वह लिङ्गपूजक सदा बहुत बड़ी सम्पत्ति का भागी होता है। ऋषि, देवता, गन्धर्व और अप्सराएँ ऊर्ध्वलोक में स्थित शिवलिङ्ग की ही पूजा करती हैं। इस प्रकार शिवलिङ्ग की पूजा होने पर भक्तवत्सल भगवान् महेश्वर बड़े प्रसन्न होते हैं और प्रसन्नचित्त होकर वे भक्तों को सुख देते हैं। ये ही भगवान् शंकर अग्निरूप से शव को दग्ध करते हुए श्मशानभूमि में निवास करते हैं। जो लोग वहाँ उनकी पूजा करते हैं, उन्हें वीरों को प्राप्त होनेवाले उत्तम लोक प्राप्त होते हैं। वे प्राणियों के शरीरों में रहनेवाले और उनके मृत्युरूप हैं तथा वे ही प्राण-अपान आदि वायु के रूप से देह के भीतर निवास करते हैं। उनके बहुत-से भयंकर एवं उद्दीप्त रूप हैं, जिनकी जगत् में पूजा होती है। विद्वान् ब्राह्मण ही उन सब रूपों को जानते हैं। उनकी महत्ता, व्यापकता तथा दिव्य कर्मों के अनुसार देवताओं में उनके बहुत-से यथार्थ नाम प्रचलित हैं।

वेद के शतरुद्रिय प्रकरण में उनके सैकड़ों उत्तम नाम हैं, जिन्हें वेदवेत्ता ब्राह्मण जानते हैं। महर्षि व्यास ने भी उन महात्मा शिव का उपस्थान(स्तवन) बताया है। ये सम्पूर्ण लोकों को उनकी अभीष्ट वस्तु देनेवाले हैं। यह महान् विश्व उन्हीं का स्वरूप बताया गया है। ब्राह्मण और ऋषि उन्हें सबसे ज्येष्ठ कहते हैं। वे देवताओं में प्रधान हैं, उन्होंने अपने मुख से अग्नि को उत्पन्न किया है। वे नाना प्रकार की ग्रह-बाधाओं से ग्रस्त प्राणियों को दुःख से छुटकारा दिलाते हैं। पुण्यात्मा और शरणागतवत्सल तो वे इतने हैं कि शरण में आये हुए किसी प्राणी का त्याग नहीं करते। वे ही मनुष्यों को आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, धन और सम्पूर्ण कामनाएँ प्रदान करते हैं और वे ही पुनः उन्हें छीन लेते हैं। इन्द्र आदि देवताओं के पास उन्हीं का दिया हुआ ऐश्वर्य बताया जाता है। तीनों लोकों के शुभाशुभ कर्मों का फल देने के लिये वे ही सदा तत्पर रहते हैं। समस्त कामनाओं के अधीश्वर होने के कारण उन्हें 'ईश्वर' कहते हैं और महान् लोकों के ईश्वर होने के कारण उनका नाम 'महेश्वर' हुआ है। उन्होंने नाना प्रकार के बहुसंख्यक रूपों द्वारा इस सम्पूर्ण लोक को व्याप्त कर रक्खा है। उन महादेवजी का जो मुख है, वही समुद्र में वडवानल है।

(श्रीमहाभारत अनुशासनपर्व, दानधर्मपर्व, महेश्वरमाहात्म्य, अ.-161)

❁❁❁❁❁❁